इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा

अंक-01 | Mobile : 7067287806 | www.kvkbemetara.org | Email : kvkbemetara@gmail.com | जुलाई-सितम्बर 2020 | वर्ष-01

संरक्षक
डॉ. एस. के. पाटील
माननीय कुलपति
इं.गां.कृ.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. एस.सी. मुखर्जी
निदेशक विस्तार सेवाएँ
इं.गां.कृ.वि.वि. रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणास्त्रोत
डॉ. अनुपम मिश्रा
निदेशक,भा.कृ.अनु.प.-
कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग
अनुसंधान संस्थान,
जोन 09, जबलपुर (म.प्र.)

प्रधान संपादक
डॉ. जी.पी. आयम
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृ.वि.के. बेमेतरा

संपादक
डॉ. वेधिका साहू
विषय वस्तु विशेषज्ञ
कृ.वि.के. बेमेतरा

संपादक मंडल
श्री तोषण ठाकुर
डॉ. एकता ताम्रकार
इंजी. जितेन्द्र जोशी
डॉ. चेतना वंजारे
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय
डॉ. हेमन्त साहू
श्री शिव सिन्हा

डॉ. एस. के. पाटील, माननीय कुलपति, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर एवं डॉ. आर. के. बाजपेयी, निदेशक अनुसंधान सेवाएं, डॉ. एस.सी. मुखर्जी, निदेशक विस्तार सेवाएं एवं डॉ. जी.के. दास, निदेशक प्रक्षेत्र द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण एवं अवलोकन

श्री शिव अनंत तायल माननीय कलेक्टर बेमेतरा द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र का भ्रमण एवं केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन

धान फसल में हानिकारक कीट एवं रोग प्रबंधन

इस कीट की इल्ली फसल के कंसा एवं गभोट अवस्था में तने के अंदर घुसकर इसे खाती हैं जिससे क्रमशः सूखा तना व सूखी बालियां बनाती हैं जो खींचने पर आसानी से बाहर निकल जाती हैं।

प्रबंधन

फसल अवस्था	कीटों की तीव्रता	रसायनिक उपचार (प्रति एकड़)
थरहा अवस्था	मध्यम से तीव्र	फिप्रोनिल 0.3 प्रतिशत दानेदार 10 किलो या कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत दानेदार 10 किलो
कंसा अवस्था	5 प्रतिशत डेडहार्ट	कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत दानेदार 10 किलो या क्लोरेन्ट्रानि-लीप्रोल 0.4 प्रतिशत दानेदार 4-5 किलो
गभोट अवस्था	1 मोथ/मी.^{2}	फ्लूबेंडामाइड 39.35 प्रतिशत एस.सी. 25-30 मिली. या कार्बोसल्फान 25 प्रतिशत ई.सी. 400 मिली.
बाली अवस्था	1 मोथ/मी.^{2}	कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 50 प्रतिशत एसपी 400-500 ग्राम या क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल18.5 प्रतिशत एस.पी. 60-70 मिली

माहु (हरा व भूरा दोनों)

धान फसल की थरहा गभोट एवं बाली अवस्था में क्रमशः भूरा एवं हरा मांहू कीट का प्रकोप होता हैं। हरा एवं भूरा मांहु पौधों के मुख्य तने से एवं हरा मांहु पत्तियों से रस चूसकर पौधे कमजोर करती हैं।

प्रबंधन

फसल अवस्था	कीटों की तीव्रता	रसायनिक उपचार (प्रति एकड़)
कंसा अवस्था	मध्यम से तीव्र	एसीफेट 75% एस.पी. 120-200 मि.ली. या कार्बोसल्फान 25% ईसी 400 मिली
गभोट अवस्था	5-10 कीट/पौधा	इमिडाक्लोप्रिड 30.5% एस.सी. 30 मि.ली. या थायोमिथाक्ज़म 25% डब्ल्यू. पी. 40 ग्राम
बाली अवस्था	5-20 कीट/पौधा	इमिडाक्लोप्रिड 30.5% एस.सी. 30 मि.ली. या थायोमिथाक्ज़म 25% डब्ल्यू. जी.40 ग्राम

कटवा

इसे फौजी कीट भी कहा जाता है, इस कीट की इल्ली फसल के थरहा अवस्था में पत्तियों को व बाली अवस्था में बालियों को काटकर खेत में गिरा देते हैं।

प्रबंधन

फसल अवस्था	कीटों की तीव्रता	रसायनिक उपचार (प्रति एकड़)
थरहा अवस्था	1 इल्ली/पौधा	फ्लूबेंडामाइड 20% डब्ल्यू. जी. 50 ग्राम या कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 4% 10 किलो
बाली अवस्था	1 इल्ली/पौधा	कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 50% एस.सी. 400-500 ग्राम या इन्डोक्सा-कार्ब 15.8% ई.सी. 80 मि.ली.

गंगई

इस कीट की इल्ली (मैगट) अवस्था फसल को नुकसान पहुंचाती है, यह कीट पौधे की प्ररोह कलिका को खाती हैं, जिससे तने के स्थान पर पोंगा बनाता हैं, जिसमें बालियां नहीं आती।

प्रबंधन

फसल अवस्था	कीटों की तीव्रता	रसायनिक उपचार (प्रति एकड़)
थरहा अवस्था	मध्यम से तीव्र	कार्बोफ्यूरान 3जी 15 किलो. या फिप्रोनिल 0.3% 10 किलो हाइड्रो-क्लोराइड 4% 10 किलो
कंसा अवस्था	5% प्रकोपित कंसा	फिप्रोनिल 5% एस.सी. 400-600 मि.ली. या फ्लूबेंडामाइड 39.35 एस.सी 25-30 मि.ली. या कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 50% एस.पी. 400-500 ग्राम

हर कदम,हर डगर, किसानों का हमसफर, किसानों की सेवा में तत्पर, कृषि विज्ञान केन्द्र

गंधी बग

इस कीट की शिशु एवं प्रौढ़ अवस्थाएं पत्तियों एवं बालियों से रस चूस लेती हैं, बाली अवस्था में इनका प्रकोप ज्यादा नुकसानदायक होता हैं, इससे दाने पोंचे रह जाते हैं।

चितरी

इस कीट की इल्ली अवस्था फसल को नुकसान पहुचाती हैं, यह कीट पत्तियों के दोनो किनारों को आपस में जोड़कर पत्तियों के हरे पदार्थ को नुकसान पहुचाते हैं जिससे पत्तियों पर सफेद धारियॉं बन जाती हैं।

झुलसा रोग (Blast)

रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों पर 1-3 मि.मी. व्यास नीले रंग के रुप में प्रकट होते हैं जो किनारो पर नुकीले होते हैं अर्थात धब्बे ऑंख के आकार के या नाव के आकार के बन जाते हैं। उक्त धब्बों का मध्यम भाग धूसर रंग का तथा किनारो का रंग भूरा अथवा गाजरी भूरे रंग का होता हैं।

प्रबंधन

1. सीधी बोनी वाले क्षेत्रों में धान बीज को ट्राइसाइक्लाजोल फफूँदनाशी द्वारा 1 ग्राम फफूँदनाशी प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिये।
2. सर्वागी फफूँदनाशी जैसे ट्राइसाइक्लाजोल (बीम या बान) -6 ग्राम 10 ली. पानी आइसोप्रोथियोलेन (फ्यूजीवन-1मि.ली./ली. पानी) या टेबुकोनाजोल (फालीक्युर-1.5मि.ली./ली.) का छिड़काव करना चाहिये। रोग तीव्रता के अनुसार 12-15 दिन बाद छिड़काव दूबारा करना चाहिये।
3. रोग प्रबंधन का सर्वाधिक प्रभावी उपाय प्रतिरोधी या सहनशील किस्मों को उगाना हैं। धान की रोग प्रतिरोधी या सहनशील किस्में दन्तेश्वरी, इंदिरा सोना, कर्मा मासुरी, सम्लेश्वरी, जलदूबी, इंदिरा राजेश्वरी, चन्द्रहासिनी व आई. आर. 64 को उगाऍं।

जीवाणु जनित झुलसन रोग

रोग के लक्षण सामान्यतः पत्तियों के किनारे पर रोग की प्रारंभिक अवस्था मे धब्बे के रुप में प्रकट होते हैं। या पत्ती के उपरी भाग के कुछ से.मी. क्षेत्र पर जलसिक्त लकीरों के रुप में दिखाई देते हैं। इसके बाद धब्बे लंबाई और चौड़ाई में वृध्दि करते हुए, किनारों पर लहरदार हो जाते हैं व कुछ दिनों के भितर पीले रंग में परिवर्तित हो जाते है।

प्रबंधन

1. रोग्रस्त फसल से बीज का चयन न करें तथा प्रमाणित बीज किसी विश्वसनीय स्त्रोत से प्राप्त कर बोने के उपयोग में लाना चाहिये।
2. संतुलित उर्वरक का उपयोग करें, साथ ही नत्रजन खादों का उपयोग अधिक मात्रा में नही करना चाहिये। पोटाश का सही मात्रा में उपयोग रोग रोधिता प्रदान करता हैं।
3. रोग प्रकोप होते ही खेत में पानी का बदलाव करें। खेत का पानी निकाल कर 25 किलो पोटाश/हे. की दर से छिड़काव करना चाहिये तथा 3-5 दिनो तक खेत में पानी नही भरना चाहिये।

प्रबंधन

फसल अवस्था	कीटों की तीव्रता	रसायनिक उपचार (प्रति एकड़)
बाली अवस्था	15-20 बग/पौधा	इथोफेनप्राक्स 10 प्रतिशत ई.सी. 250 मि.ली. या एसीटामिप्रिड 20 प्रतिशत एस.पी. 250 ग्राम

प्रबंधन

फसल अवस्था	कीटों की तीव्रता	रसायनिक उपचार (प्रति एकड़)
कंसा अवस्था	1 ग्रसित पत्ती/पौधा	कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 50 प्रतिशत एस.पी. 400-500 ग्राम या इंडाक्साकार्ब 14.5 प्रतिशत ई.सी., इमिडाक्लोप्रिड 7.7 प्रतिशत एस.सी. 160-200 मि.ली.
गभोट अवस्था	1 पत्ती/पौधा	कार्टाप हाइड्रोक्लोराइड 50 प्रतिशत एस.पी. 400-500 ग्राम या क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 60-70 मि.ली.

शीथ ब्लाईट

यह रोग धान में कंसे निकलने की अवस्था से गभोट की अवस्था तक देखा जा सकता है। रोग प्रकोपित क्षेत्र से पानी की सतह से आरंभ होकर पर्णच्छद पर उपर की ओर फैलता है और अंततः पौधा रोग ग्रस्त होकर झुलस जाता है। पर्णच्छद पर दो-तीन से. मी. लम्बे, 0.5 से.मी. चौड़े भूरे से बदरंगे धब्बे बनते है।

प्रबंधन

1. रोगी फसल को जलाकर नष्ट कर देना चाहिए। पौधों की रोपाई निश्चित दूरी 10X15 से.मी. (शीघ्र पकने वाली किस्म) या 20 X15 से.मी. (मध्यम से देरी से पकने वाली किस्म) पर करे।
2. खड़ी फसल मे रोग पकोप होने पर हेक्साकोनाजोल कवकनाशी (1मी.ली. प्रति ली.) का छिड़काव 1 0 से 12 दिन के अंतर से करे।

पर्णच्छद विगलन रोग (शीथ रॉट)

इस रोग के लक्षण धान की गभोट वाली अवस्था में दिखाई देते हैं। गभोट के निचले हिस्से पर हल्के भूरे रंग के धब्बे बनते है, जिनका कोई विशेष आकार नहीं होता। ये धब्बे एक भूरे रंग की परिधी से घिरे रहते हैं। इस रोग की वजह से बाली गभोट के बाहर नहीं आ पाती हैं। बाली का कुछ भाग ही बाहर आ पाता हैं, उसमें दाने नहीं भरते और उत्पादन बहुत कम हो जाता हैं।

प्रबंधन

1. धान बीज को बुवाई से पूर्व 17 प्रतिशत नमक के घोल में डुबाने से हल्के तथा खराब बीज (बदरा) उपर आ जाते हैं एवं स्वस्थ पुष्ट बीज बैठ जाते हैं। स्वस्थ बीज का चयन कर बुवाई के लिए उपयोग करना चाहिए।
2. चयनित बीज का बीजोपचार कवकनाशी कारबेण्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से करें।
3. रोग सहनशील किस्म दंतेश्वरी का चयन करें।

कूट कलिका रोग (फाल्स स्मट)

धान का यह रोग फफुंद से होता है। इस क्षेत्र में रोग को लाई फूटना कहते हैं। जिन जातियों में इस रोग का प्रकोप ज्यादा होता है, उनमें धान का उत्पादन कम हो जाता हैं। इस रोग के लक्षण बाली निकलने के बाद दानों पर दिखाई देते है, जिससे उन दानों का आकार काफी बड़ा हो जाता हैं। ग्रसित दानो का रंग पहले मटमैला, हरा, फिर नारंगी व धान पकने के समय काला हो जाता हैं। इस प्रकोप की वजह से दाने बॉल में बदल जाते हैं।

प्रबंधन

1. संतुलित उर्वरक का उपयोग करें। जिन किस्मों में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है, उन्हें नहीं उगाना चाहिए।
2. बाली निकलने की प्रारंभिक अवस्था में तथा 50 प्रतिशत पुष्पाकरण होने पर मेंकोजेब (डायमेन एम-45) का 2.0 ग्राम/ली. पानी या प्रोपीकालोनाजोल (टिल्ट 1 एम.एल./ली. पानी) की दो दिवस के अन्तराल में दो बार छिड़कांव करना चाहिए।

पिछले तीन माह (अप्रैल – जून) की उपलब्धियां

विस्तार गतिविधियां :-

क्र.	विषय	संख्या	लाभान्वित
1	कृषक संगोष्ठी	1	110
2	वैज्ञानिकों का कृषक खेतों पर भ्रमण	52	150
3	प्रदर्शनी	1	120
4	लोकप्रिय साहित्य	1	मास

आगामी तीन माह (जुलाई-सितम्बर) की प्रस्तावित गतिविधियां :-

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	फसल उत्पादन	5	5	150
2	उद्यानिकी	4	4	120
3	पौध संरक्षण	4	4	120
4	कृषि अभियांत्रिकी	5	5	150
5	मृदा स्वास्थ्य	4	4	120

प्रक्षेत्र परीक्षण/अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन :-

क्र.	विषय	संख्या	लाभान्वित
1	वर्ष भर चारा उत्पादन	9	9
2	वैज्ञानिक विधि से कपास का उत्पादन	4	4
3	धान की नई किस्म आर. आर. एफ -105 का मूल्यांकन	4	4
4	डायरेक्ट सीडेड धान - चना सस्य प्रणाली में खरपतवार नियंत्रण	13	13
5	धान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड के आधार पर संतुलित उर्वरक का आंकलन	4	4
6	धान में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन	5	5
7	अरहर की फसल में रिज एण्ड फरो बुआई का प्रदर्शन	10	10
8.	सोयाबीन-अरहर अंतवर्ती फसल में इन्क्लाइन्ड प्लेट प्लांटर का आंकलन	5	5

प्रस्तावित विस्तार गतिविधियां :-

क्र.	विषय	संख्या	लाभान्वित
1	प्रक्षेत्र दिवस	2	200
2	फिल्ड सीडी शो	6	350
3	कृपक संगोष्ठी	3	200
4	वैज्ञानिकों का कृपक खेतों पर भ्रमण	35	200
5	प्रदर्शनी	1	500
6	लोकप्रिय साहित्य	1	मास

सोयाबीन फसल की विभिन्न अवस्थाओं में हानि पहुंचाने वाले प्रमुख कीट

क्र.	सोयाबीन फसल में लगने वाले कीटों का नाम	फसल में लक्षण	प्रबंधन
1.	तना मक्खी	तना मक्खी तने के अंदरूनी भाग को खाते हुए इसे खोखला कर देती है। प्रारंभिक अवस्था में प्रकोप होने पर पत्तियों का ऊपरी भाग सूखकर मुड़ जाता है तथा बाद में पूरा पौधा मर जाता है।	1. क्लोरएन्ट्रीनीलीप्रोल 10 प्रतिशत लेम्डासायहेलोथीन 5 प्रतिशत 250 मिली. /हे., प्रोपेनोफॉस 50 ई. सी. 1. 2 ली./हे. एसीफेट 75 एस.पी. 750ग्राम/हे. क्लोरएन्ट्रीनीलीप्रोल 10प्रतिशत 250 मिली /हे., इथोफेनप्राक्स 10 ई.सी. 10ली./हे.। 2. फसल अवशेष को नष्ट करें -ऐसा करने से श्रक भृंग एवं तना मक्खी की इल्लियां नष्ट हो जाती है। 3.सोयाबीन की बोनी मानसून की पहली बारिश में कर देना चाहिए।
2.	चक्र भृंग (गर्डल बीटल)	चक्र भृंग की इल्लियां पीले रंग की होती है, जो तने के अंदर सुरंग बनाती है। प्रारंभिक तथा फल्लियाँ बनने की अवस्था में प्रकोप होने पर पौधें की बढ़वार रूक जाती है और फल्लियों में दाने नहीं बनते है।	
3.	तम्बाकू की इल्ली	छोटी इल्लियां समूह में रहकर पत्तियों की निचली सतह से हरे पदार्थ को खुरचकर खाती है, जिससे पत्तियां सफेद, पीली तथा जालीदार हो जाती हैं। बड़ी इल्लियां पूरे खेत में फैलकर पत्तियों को काटकर खाती है, जिससे पौधा पूर्णतः पत्तीविहीन हो जाता है।	1. बुवाई के 35-40 एवं 55-60 दिनों बाद -क्विनालफास 25 ई. सी. 1250 मिली./हे., क्लोरएन्ट्रीनीलीप्रोल 10 प्रतिशत लेम्डासायहेलोथीन 5प्रतिशत 250 मिली. /हे., फ्लूबेनडामाइड 480 एस. सी. 175- 200 मिली/हे., स्पाइनोसैड 45 एस. सी. 250 मिली /हे., इल्ली की अवस्था बड़ी होने पर प्रोफेनोफास 40 ई. सी. साइपरमेथ्रिन 4 ई. सी (पोलीट्रिन सी. 44) 1 ली./हे. ,क्लोरएन्ट्रीनीलीप्रोल 10 प्रतिशत लेम्डासायहेलोथीन 5 प्रतिशत 250 मिली. /हे.। 2. कतार से कतार की उपयुक्त (30 से.मी.) को सुनिश्चित करें । घनी फसल बोने से तम्बाखू की इल्ली, अर्ध्द कुण्डल कीट का प्रकोप बढ़
4.	अर्द्ध कुण्डलक कीट	नवजात इल्लियां पत्तियों की निचली सतह से हरे पदार्थ को खुरचकर खाती है, जबकि बड़ी इल्लियां पत्तियों में छिद्र बनाकर नुकसान करती है। अधिक प्रकोप होने पर संपूर्ण पत्तियों को खाकर नष्ट कर देती है।	
5.	सफेद मक्खी	सफेद मक्खी रस चूसकर क्षति पहुंचाती हैं, जिससे पौधा की बढ़वार रूक जाती है। अधिक प्रकोप होने पर पत्तियां मुड़कर सूख जाती है तथा दाने सिकुड़ जाते है। सफेद मक्खी "यलो वेन मोजेक" नामक बीमारी भी फैलाती है जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा पौधों पर फल्लियां भी कम लगती है।	1.क्लोरएन्ट्रीनीलीप्रोल 10 प्रतिशत लेम्डासायहेलोथीन 5 प्रतिशत 250 मिली/हे., मिथोमिल 12.5 एल 2.0, ली./हे., पॉलीट्रिन 2.0 ली./हे. पॉलीट्रिन सी. 440 % 1-0ली./हे. नरले-डी 505 1.0ली./हे.। 2.जिन स्थानों पर "यलो वेन मोजेक" का प्रकोप अधिक होता है, वहॉ के किसान बीज के पहले इमिडाक्लोपिड की 1.25 मि.ली. मात्रा प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। ऐसा करने से सफेद मक्खी के प्रकोप से फसल 20-25 दिनों तक सुरक्षित रहती है।

तना मक्खी

चक्र भृंग

तम्बाकू की इल्ली

अर्द्ध कुण्डलक कीट

सफेद मक्खी

सोयाबीन फसल में हानिकारक कीट एवं रोग प्रबंधन

सोयाबीन फसल में होने वाले प्रमुख रोग :-

क्र.	सोयाबीन फसल में होने वाले प्रमुख रोग	लक्षण	प्रबंधन
1.	एन्थ्रेक्नोज	एन्थ्रेक्नोज बीमारी में भूरे धब्बे बनते है जो बढ़कर फली के ऊपर को घेरे होते है जिससे फलियां कमजोर सूख जाते है तथा पत्तियां गिर जाते है पत्तियों में भूरे धब्बे के रूप में दिखाई देने लगते है फलों से दाने नहीं भरते और पत्तियां मुड़ी नजर सूख जाते है	मेन्कोजेब या कार्बेन्डाजिम मिश्रण का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर पहले छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव फूल एवं फलों में दाने भरते समय 8-10 दिन के अन्तराल से 10 ग्राम टेबोकोनाजोल प्रति 10 लीटर मिलाकर करें।
2.	राइजोक्टोनिया झुलसा	पत्तियों के ऊपर पीला भाग बनता है, जो नीचे से हरे से भूरे हो जाते है तथा बाद में गहरे भूरे से काला हो जाता है पत्तियां झुलसकर नीचे की ओर लटक जाते है	कार्बेन्डाजिम का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर फसल में रोग के लक्षण दिखते ही 15 दिन के अन्तराल में 2 बार छिड़काव करें।
3.	स्क्लेरोटिनिया तना सड़न	इसमें भूमि से तने पीले एवं भूरे-सफेद तने के आधार भाग पर सफेद कपास के समान कवक का जाल फैल जाता है जिससे संक्रमित पौधे नष्ट हो जाते है	थीरम व कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बुआई करें।
4.	पीला मोजेक	पत्तियों के ऊपर पीले रंग के धब्बे बनते है, जो बाद में फैलकर सम्पूर्ण पत्तियों को पीला कर देते है ये पीला भाग भूरे हुए धब्बों में परिवर्तित होने लगते है, जिससे फलियां नहीं बनती एवं उपज 80-100 प्रतिशत तक प्रभावित होती है	ऑक्सीडेमेटान मिथाइल 25 ई.सी. 1000 मि.ली. 700 लीटर पानी में घोलकर 15-20 दिन के अंतर में 2-3 बार छिड़काव करें जे.एस. 97-52, जे.एस. 335 एवं एन.आर.सी. 4 का प्रयोग करें।

1. एन्थ्रेक्नोज

2. राइजोक्टोनिया झुलसा

3. स्क्लेरोटिनिया तना सड़न

4. पीला मोजेक

सामयिक सलाह

❖ जुलाई

1. धान की रोपाई कतार में करें।
2. धान में कतार से कतार की दूरी किस्म के अनुसार 15 से 20 से.मी. रखें।
3. रोपा धान में नींदानाशक की उचित दवा अंकुरण पूर्व तथा अंकुरण के 15-20 दिन पश्चात छिड़काव करें।
4. बुवाई के पूर्व बीज को फफूंदनाशक दवा से उपचारित करें। तत्पश्चात् जैव उर्वरक जैसे पी.एस.बी., एजोस्पाइरिलम, के.एस.बी. से उपचारित कर बुवाई करें।
5. नर्सरी तैयार होने के उपरान्त मिर्च, बैंगन, टमाटर की रोपाई करें।
6. अदरक, हल्दी, भिण्डी एवं बरबट्टी की निंदाई गुड़ाई एवं पानी न गिरने पर सिंचाई की समुचित व्यवस्था करें।
7. केले के पौधे की रोपाई का कार्य आरंभ करें।
8. नये फल वृक्षों को लगाने का कार्य आरंभ करें।
9. अरहर की बुवाई यदि न हो तो 15 जुलाई के पूर्व अवश्य कर लेवें।
10. अधिकांश प्रदर्शन जैसे-भूमि बांधना, कांकियापन, प्लास्टिक तथा मेंढ़ कार्य इसी माह किए जाना चाहिए।
11. गुलगुल तैयार करने के लिये बीजों को क्यारियों में रोपित करें।
12. लता वाली सब्जियों हेतु मंडप बनाएं।
13. फ्रेंच बीन, भिण्डी, बरबटी, ग्वारफली की बुवाई करें।
14. सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु नींदानाशक दवा का छिड़काव अनुशंसित मात्रा में करें।

❖ अगस्त

1. धान के खेत में लगातार पानी भरकर न रखें।
2. देर हो जाने पर यदि धान की रोपाई इस माह करनी पड़ रही हो तो पौधों की दूरी कम रखें एवं 3-4 पौधों का उपयोग करें।
3. किसान भाईयों को सलाह है कि धान की विभिन्न अवस्थाओं में अनुशंसित मात्रा में नाइट्रोजन का छिड़काव करें।
4. धान में यूरिया का छिड़काव करने के पूर्व खेत में पानी की मात्रा कम कर देवें।
5. हरी काई का प्रकोप दिखे तो पानी को खेत से निकाल देवें। खेत में जिस जगह से पानी अंदर आता है, वहाँ कॉपर सल्फेट (नीला थोथा) पोटली में बांध कर रखें।
6. केले में बाहर सकर्स को पहचान कर निकालने का कार्य करते रहें एवं जिन पौधों में फूल/फल आया हो तुरंत बांस लगाकर सहारा प्रदान करें।
7. मुर्गियों को कृमि रोग से बचाव हेतु हर तीन माह में कृमि नाशक दवा खिलायें।
8. धान की विभिन्न अवस्थाओं में अनुशंसित मात्रा में नत्रजन का छिड़काव करें।
9. अमरूद, नींबू एवं अन्य वृक्षों में गूटी बांधें तथा पिछले माह बांधी गई गूटी कलमों को मातृ पौधों से अलग कर क्यारियों में रोपण करें।
10. वर्षा ऋतु की सब्जियों में उर्वरक प्रबंधन करें।
11. कुम्हड़ा में बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।
12. खरीफ प्याज की खेत में रोपाई करें।

❖ सितम्बर

1. धान की गभोट अवस्था पर किस्म के अनुसार यूरिया की मात्रा देवें।
2. मूंग, उड़द में पकने की अवस्था आ गई हो तो फलियों की तुड़ाई कर सुरक्षित स्थान पर रखें।
3. अरहर में दो बार निंदाई-गुड़ाई 25-30 दिन पर व 40-60 दिन की अवस्था पर करनी चाहिए।
4. यदि पानी ज्यादा गिरता है तो अरहर्वी व तिलहनी फसल में जल की समुचित व्यवस्था करें।
5. धान फसल पर पीला तना छेदक कीट के पतंगे दिखाई देने पर फसल का निरीक्षण कर तना छेदक के अंडा समूह को एकत्र कर नष्ट कर देवें। साथ ही डेडहार्ट (सूखी पत्ती) को खींचकर निकाल देवें।
6. धान के फसल में झुलसा रोग के लक्षण नाव आकार के धब्बे के रूप में दिखते ही ट्राइसाइक्लाजोल 0.6 ग्राम/लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए।
7. धान में तना छेदक कीट के निगरानी हेतु फेरोमोन ट्रेप 8 नग प्रति एकड़ की दर से उपयोग करें।
8. उड़द व मूंग में भभूतिया रोग लगने पर कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम/ली. पानी) या डिनोकेप (1 मि.ली./ली. पानी) में किसी एक दवा का छिड़काव करें।
9. आम फसल की समाप्ति के पश्चात् रोगग्रस्त शाखाओं के हल्की छटाई का कार्य करें।
10. खरीफ प्याज की खेत में रोपाई करें।

केन्द्र में पदस्थ अधिकारी एवं वैज्ञानिको का संपर्क नंबर

नाम	पदनाम एवं विशेषज्ञता	मोबाइल
डॉ. जी.पी. आयम	वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन	9406356172
श्री तोषन ठाकुर	वि.व.वि., मत्स्कीय	9826667395
डॉ. एकता ताम्रकार	वि.व.वि., कीट विज्ञान	9993442584
इंजी. जितेन्द्र जोशी	वि.व.वि., फार्म मशीनरी एवं पावर इंजी.	7805034366
डॉ. चेतना बंजारे	वि.व.वि., उद्यानिकी	8962763667
डॉ. योगिता साहू	वि.व.वि., मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन	6314397676
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय	वि.व.वि., मत्स्य विज्ञान	7987738324
डॉ. हेमन्त साहू	प्रक्षेत्र प्रबंधक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन	9039261949

प्रेषक :
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, बेमेतरा
जिला – बेमेतरा (छ.ग.) पिन नं. – 491335

प्रति,
श्री/श्रीमती/डॉ. ______________________

हर कदम, हर डगर, किसानों का हमसफर, किसानों की सेवा में तत्पर, कृषि विज्ञान केन्द्र